

पानी की सीख

* ब्रह्मकुमारी राजरनी, इलग्हावाद

प्रत्येक प्राणी का पानी के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। महर्षि पतञ्जलि ने तो प्राणी के लिए पानी की अनिवार्यता देखकर प्राणी की परिभाषा पानी के आधार पर ही की है। जो बिना पानी के पीड़ित होने लगता है वह प्राणी है। पानी के अति विशिष्ट गुणों को देख इसे जीवन का आधार ही नहीं अपितु अपना आदर्श गुरु भी मान लें तो हम सब का कल्याण हो जाएगा। प्रस्तुत हैं पानी के कुछ विशिष्ट गुण –

शीतलता – कितना भी उबाला जाए फिर भी पानी अपने मूल शीतल स्वभाव की ओर ही लौट आता है। मनुष्य आत्मा भी पानी की तरह मूल रूप में शान्त स्वरूप है। वह कितनी भी क्रोध से आक्रान्त हो जाए पुनः अपने शान्त स्वरूप की ओर लौट आती है। जैसे पानी को उबालने के लिए बाहर से गर्मी दी जाती है, उसके पास अपनी गर्मी नहीं है, इसी प्रकार मानव आत्मा के पास अपनी गर्मी अर्थात् क्रोध, हिंसा, द्वृढ़, कपट नहीं हैं। ये विकार स्वयं की विस्मृति होने पर, आवरण की तरह छाकर उसके मूल गुणों को ढक लेते हैं। अतः जब भी पानी के सम्पर्क में आएं, याद करें, मैं पानी की तरह शीतल और शान्त स्वरूप आत्मा हूँ।

गतिशीलता – पानी निरन्तर गतिशील रहता है, मार्ग में चट्टान आ जाये तो भी अगल-बगल से आगे बढ़ने का रास्ता खोज लेता है। मार्ग को रोकने वाली शिला एक दिन बालू के कण में बदल जाती है। हम भी पानी की तरह निरन्तर बहने वाले बनें। कहा जाता है, पानी बहता भला, योगी रमता भला। जैसे खड़े पानी में काई, कीड़े, सड़ान्ध पैदा हो जाती है इसी प्रकार स्थान और व्यक्तियों के मोह के संकुचित गड्ढे में पड़े व्यक्ति में भी कई दुर्दृष्टि पैदा हो जाते हैं। जैसे पानी सबकी प्यास बुझाता, धरती को हरा-भरा करता चलता जाता है, उसी प्रकार हम भी सबको सुख देते हुए निरन्तर गतिशील रहें।

पारदर्शिता – महात्मा बुद्ध ने कहा है, ‘मानव जीवन पानी की तरह पारदर्शक होना चाहिए।’ पानी में कोई दुराव-छिपाव या पर्दा नहीं, जैसा दिखता है, भीतर भी वैसा ही है। पानी की तरह ही हमें भी अन्दर-बाहर एक जैसा रहना है। जीवन खुली किताब की तरह हो, कोई भी, कभी भी, कहीं से भी पढ़ ले।

साम्यता का भाव – पानी के भरे बर्तन में से, चाहे नीचे लगी टूटी से या ऊपर से ढक्कन खोलकर, कहीं से

भी पानी निकालें, पानी अपने तल को समतल रखता है। पानी की निकासी होने पर उसकी कमी पूरे तल में समान रूप से बाँट जाती है। यदि बर्तन में कहीं से पानी भरा जाता है तो भी उसका समान वितरण तुरन्त हो जाता है। पानी का यह गुण हम भी अपने में धारण करें। जो लाभ हो, प्राप्ति हो उसे सबका लाभ बना दें, सबसे बाँट लें। प्राप्तियों का संग्रह ना करें। जो इस प्रकार बाँट कर चलता है उसको कमी का सामना कभी नहीं करना पड़ता।

हल्का रहना – पानी हल्के को सिर पर रखकर ले चलता है। भारी को गिराने में परहेज नहीं करता है। हम भी हल्के रहेंगे तो प्यारे बाबा पलकों पर बैठाकर ले उड़ेंगे। भारी रहेंगे तो बाबा की देख-रेख से विचित रह जाएंगे। अतः सदा हल्के रहें और सदा उड़ते रहें।

समायोजन – पानी को जिस बर्तन में डालो या जिस भी स्थान पर रखो वैसा आकार धारण कर लेता है क्योंकि उसमें लचीलापन बहुत ज्यादा है। हमें भी समय और परिस्थिति के अनुसार ढलने की कला आनी चाहिए तभी हम सफल हो सकते हैं। इस प्रकार पानी के गुणों को ग्रहण कर हम और अधिक गुणवान बन जाएंगे। ♦